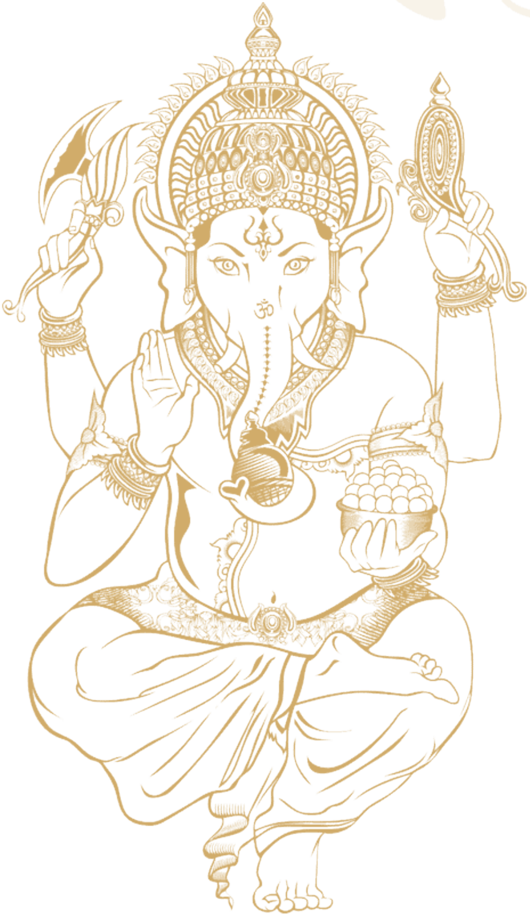

Mr.

18 Nov 2025

08:04 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120191201**

तिथि 18/11/2025 **समय** 08:04:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:10
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:48:49 घं
वेलान्तर	00:14:52 घं
सूर्योदय	06:27:17 घं
सूर्यास्त	17:12:34 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	14
नक्षत्र	स्वाति
योग	आयुष्मान
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रु-रुपेश
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

राहु 16वर्ष 1मा 18दि
राहु
18/11/2025
05/01/2042

राहु	18/09/2026
गुरु	11/02/2029
शनि	19/12/2031
बुध	07/07/2034
केतु	25/07/2035
शुक्र	25/07/2038
सूर्य	19/06/2039
चन्द्र	18/12/2040
मंगल	05/01/2042

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 9मा 15दि
पिंगला
18/11/2025
04/09/2027

	18/11/2025
धान्या	14/12/2025
भ्रामरी	05/03/2026
भद्रिका	14/06/2026
उल्का	14/10/2026
सिद्धा	05/03/2027
संकटा	14/08/2027
मंगला	04/09/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			21:49:44	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			01:46:22	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.55	पुत्र	पितृ	सम्पत
चंद्र			08:02:59	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	सम राशि	0.90	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	15:34:50	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	स्वराशि	1.28	अमात्य	भ्रातृ	विपत
बुध	व	अ	07:08:10	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	बुध	सम राशि	1.39	मातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु	व		00:51:52	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.15	कलत्र	धन	सम्पत
शुक्र			19:45:53	तुला	स्वाति	4	राहु	मंगल	मूलत्रिकोण	0.88	आत्मा	कलत्र	जन्म
शनि	व		01:01:43	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.84	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु	व		21:39:30	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		21:39:30	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

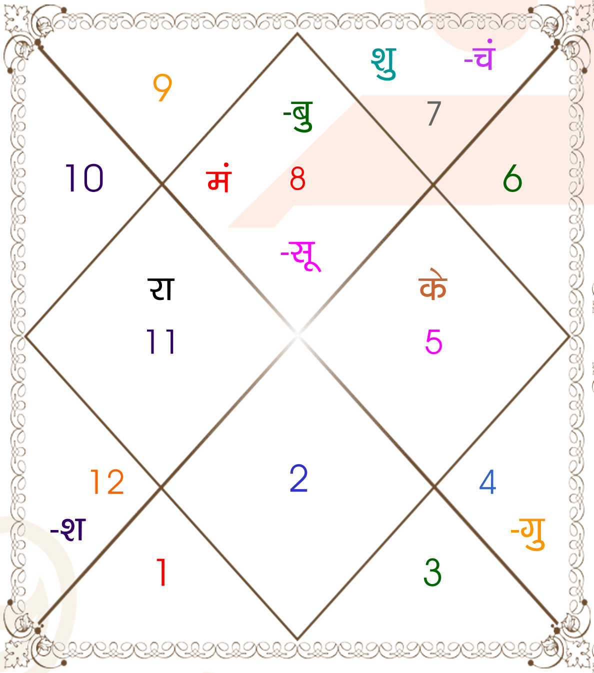

चन्द्र कुंडली

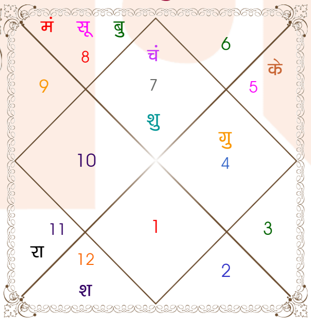

नवमांश कुंडली

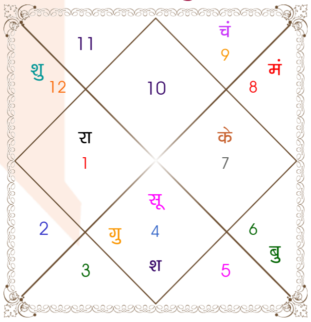

सर्वाष्टकवर्ग

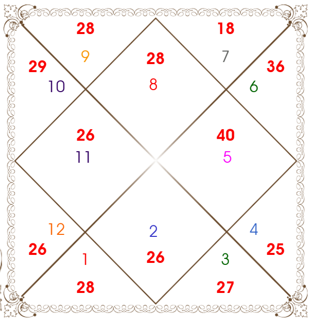

दशमांश कुंडली

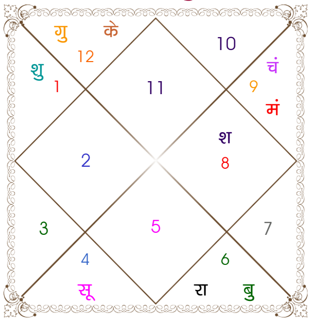

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आपका जन्म स्वाती नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, योनि महिष, नाड़ी अन्त्य, गण देव, तथा वर्ग मृग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ ”रू” अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा रूपसिंह ।

आप अपने जीवन काल में सर्व प्रकार से क्लेशों को सहन करने में समर्थ रहेंगे। बड़े से बड़े दुःख को सहन करने की शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी। व्यापार में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा प्रधान रूप से इसी को अपनी आजीविका का साधन बनाएंगे आपके मन में दया का भाव हमेशा विद्यमान रहेगा तथा कृपापात्र लोगों के ऊपर आपकी हमेशा कृपादृष्टि रहेगी। आप हमेशा मधुर एवं प्रिय लगने वाली वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे। जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में गहन निष्ठा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। अतः आप नियमपूर्वक धर्माचरण में सदैव तत्पर रहेंगे।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

आप देवताओं तथा ब्राहमणों के हमेशा प्रिय कार्य करने वाले होंगे तथा इनके प्रति आपके मन में अगाध श्रद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा। आप अपने जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों का उपभोग करेंगे तथा धन वैभव एवं ऐश्वर्य से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे परन्तु आपकी बुद्धि मध्यम ही होगी। तीक्ष्णता का उसमें अभाव रहेगा।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आपका शारीरिक सौन्दर्य अत्यन्त ही आर्कषक एवं प्रभावशाली रहेगा। साथ ही तेजस्विता से भी आप सुशोभित रहेंगे। समाज में अन्य जनों से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा उनके आप प्रिय एवं आदर के पात्र होंगे। इस सबसे आपको प्रसन्नता की अनूभूति होगी। इसके अतिरिक्त आप राज्य या सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन की प्राप्ति भी करेंगे तथा सुख पूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगे।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

आप विविध प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनका ज्ञानार्जन करेंगे। अतः समाज में एक विद्वान के रूप में आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन काल में एक धर्मनिष्ठ पुरूष की तरह समस्त धामिक नियमों का परिपालन करते रहेंगे। आपका चाल चलन अच्छा तथा स्वभाव सुशीलता से युक्त रहेगा। देवताओं के प्रति आपके मन में निरन्तर भक्ति की भावना रहेंगी साथ ही आप स्वभाव से कंजूस भी रहेंगे।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्‌गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुन्दर होंगे। आपके नेत्र विशाल एवं नाक उन्नत रहेगी। आप नाना प्रकार के वाहनों से सर्वथा युक्त रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। समाज में स्त्रियों से आपके संबंध अधिक मात्रा में रहेंगे। साथ ही वाहन तथा भूमि से आप बल एवं धन की पूर्ण रूप से प्राप्ति करेंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। सभी लोग आपको मान सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धनैश्वर्य एवं वैभव का भी आपके पास अभाव नहीं रहेगा। आप हमेशा स्त्री से पराजित रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी की आज्ञा एवं निर्देश से सम्पन्न करेंगे। कई कार्यों को करने की क्षमता आप में विद्यमान रहेगी तथा कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के आप अनन्य भक्त रहेंगे। साथ ही धनसंग्रह के प्रति भी

आपकी रूचि रहेगी। इसके अतिरिक्त बन्धु वर्ग के कार्यो को करने में भी आप तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

समाज में सज्जन पुरूषों की सेवा में आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा विद्वता एवं पवित्रता से सर्वदा सुशोभित रहेंगे। यात्रा एवं भ्रमण के प्रति आप रूचिशील रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय इसी में व्यतीत करेंगे। वस्तुओं के क्रयविक्रय के कार्य में आप अत्यन्त ही प्रवीण होंगे। आप अपने समस्त बन्धुओं तथा संबंधियो का उपकार करेंगे तथा बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रुषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य की प्रधानता रहेंगी तथा समस्त कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप न्याय के प्रति अत्यन्त ही निष्पक्ष रहेंगे तथा इसमे पूर्ण आस्था रखेंगे। आपकी निष्पक्षता की प्रकृति को मध्य नजर रखते हुए अन्य लोग अपने विवादों में समाधान करने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच बनाएंगे जिसका आप भी ईमानदारी से निर्वाह करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संतति संख्या अल्प रहेगी एवं भाग्योदय भी काफी समय के बाद होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा राज्य या सरकार के उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग को खुश करने की कला में आप निपुण होंगे। तथा इनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करने में सफलता अजित करेंगे। साथ ही बन्धुवर्ग को आप हमेशा कुछ न कुछ सहयोग प्रदान करते रहेंगे। लेकिन कभी कभी आप अधिक बोलेगे। अतः इससे लोगों पर आपके प्रभाव में न्यूनता आऐंगी। ज्योतिष शास्त्र अथवा ग्रह नक्षत्र संबंधी विद्या में आप पांरगत रहेंगे। बन्धु एवं सेवकों के प्रति आपके मन में हमेशा अनुराग एवं सहानुभूति का भाव रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।

आप कभी कभी असमय अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे तथा दुःख की भी अनुभूति करेंगे। आप प्रिय एवं मधुर वाणी को बोलने वाले होंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके हृदय में दया एवं करुणा की भावना रहेगी तथा नेत्रों में भी चंचलता की बहुलता रहेंगी। जीवन में आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तन शील रहेगी कभी आपके पास अतिशय धनदौलत रहेगी तो कभी इससे हीन भी रहेंगे। व्यापारिक कार्यों में आपकी पूर्ण रुचि रहेंगी तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों के प्रति आपके मन में विशेष सहयोग तथा स्नेह रहेगा। इसके अतिरिक्त आप परदेश या विदेश में भी स्थाई रूप से निवास करेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप सर्वदा वाहनयुक्त रहेंगे। आपकी प्रवृति दानशीलता से सर्वथा युक्त रहेंगी। स्त्रियों से आपके अधिक संबंध रहेंगे इसके अतिरिक्त मित्र वर्ग से भी आपका पूर्ण स्नेह रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आप श्रेष्ठ एवं मधुरवाणी से युक्त रहेंगे। आप निर्मल तथा सरल बुद्धि के व्यक्ति होंगे। आपका अन्य जनों से मृदु एवं निर्मल व्यवहार रहेगा। साथ ही आप सुगमता पूर्वक अपने विचारों को प्रस्तुत करेंगे। तथा उतनी ही सुगमता से अन्य के विचारों को भी ग्रहण करने में भी समर्थ होंगे। आप अल्प भोजन करने के प्रति रूचिशील रहेंगे। गुणों के आप महान ज्ञाता होंगे तथा स्वयं भी उच्च श्रेणी के लोगों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य एवं वैभव से भी आप हमेशा युक्त रहेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता का भाव आपके मन में हमेशा विद्यमान रहेगा। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा आपकी प्रवृति सादगी से युक्त रहेंगी। भौतिकता से आप कम ही प्रभावित रहेंगे एवं एक महान विद्वान के रूप में आप आदरणीय व्यक्ति रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप वाद विवाद तथा आपसी संघर्षो में सर्वथा विजय प्राप्त करने वाले होंगे। आप एक साहसी व्यक्ति होंगे तथा स्वयं साहसिक कार्यों को करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आप में कामेच्छा की भावना की सर्वथा प्रबलता रहेगी एवं आपकी संततियों की संख्या भी अधिक रहेगी। धर्म के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा किन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता का सर्वथा अभाव रहेंगा।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यो के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रूग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से

सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्लयोग, तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण आदि शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वजित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में व्यवधान तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, हीरा, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल दही इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।